卐 ॐ गं गणपतये नमः 卐

## !! श्रीराम !!

श्रीराम जय राम जय जय राम

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुख मूल॥

### सम्पादक मण्डल


पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा

डॉ0 भगवान दास पटैरया

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'

श्रीमती मंजु बंसल


# स्मारिका

विक्रमी संवत् 2076 सन् 2019-2020


वार्षिक अंक - 26

## श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

पंजीकृत कार्यालय : 593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली - 110061

स्थानीय कार्यालय : ए-447, सैक्टर - 47, नोएडा - 201 303

वैबसाइट - www.shriramcharit.com, ई-मेल - contactus@shriramcharit.com

दूरभाष - 0120-4305457

चल - 9811056467

मुद्रक : एक्सप्रैस प्रिंट हाउस, गाजियाबाद

फोन : 9350772514

ई-मेल : vinit.tyagi.gzb@gmail.com

# पाठकों से निवेदन

स्मारिका का यह वार्षिक अंक–26 आपके हाथ में है। हमारा प्रयास रहा है कि इसमें भगवान श्रीरामजी के आदर्शों को प्रतिपादित करते हुए ऐसे लेख प्रकाशित किए जाएँ, जिनसे समाज में नैतिक मूल्यों का उत्थान हो। इस दिशा में हम कहाँ तक सफल हुए, यह आप ही बता सकते हैं। आशा करते हैं कि आप पत्रिका पढ़कर हमें **अपना लेख / अपनी प्रतिक्रिया अवश्य भेजेंगे,** ताकि हम अगले अंक में उसे समाहित कर सकें। लेख के संदर्भ में निम्नांकित बिन्दु उल्लेखनीय हैं –

1. **लेख श्रीरामचरितमानस में वर्णित प्रसंगों पर तथा उसका शीर्षक यथासंभव चौपाई, दोहा आदि पर आधारित हो।**
2. लेख में उद्धरित दोहा–चौपाई आदि गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित 'श्रीरामचरितमानस' के अनुसार हों। कृपया संदर्भ निम्नांकित प्रकार से अंकित करें।

   **जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।**

   (5/1/1)

   5/1/1 का आशय है, पाँचवें काण्ड (सुंदरकाण्ड) के पहले दोहे की पहली चौपाई। सातों काण्डों को क्रमशः इस प्रकार से इंगित करें :– 1. बालकाण्ड, 2. अयोध्याकाण्ड, 3. अरण्यकाण्ड, 4. किष्किंधाकाण्ड, 5. सुंदरकाण्ड, 6. लंकाकाण्ड एवं 7. उत्तरकाण्ड।
3. लेख ई–मेल से भेजने हेतु कृपया पृष्ठ सं0 12 देखें। लेख **bpateria@gmail.com** पर अथवा 9899004263 पर **whatsapp** या A 447 सैक्टर–47, नोएडा–201303 पर डाक से भी भेज सकते हैं।

**स्मारिका के प्रकाशन में विज्ञापन से प्राप्त धन का महत्वपूर्ण योगदान है।** अनुरोध है कि आप भी अपने संस्थान का विज्ञापन भेजकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

**विज्ञापन दरें इस प्रकार से हैं –**

| क्रमांक | विवरण | राशि (रुपयों में) |
|---|---|---|
| 1. | प्रथम पृष्ठ के पीछे (दूसरा कवर पेज) | 35,000 |
| 2. | अंतिम पृष्ठ (चौथा कवर पेज) | 30,000 |
| 3. | अंतिम पृष्ठ के पीछे (तीसरा कवर पेज) | 25,000 |
| 4. | पत्रिका के अन्दर पूर्ण पृष्ठ | 15,000 |
| 5. | पत्रिका के अन्दर आधा पृष्ठ | 10,000 |

पाठकों से प्राप्त सहयोग राशि का योगदान भी इसके प्रकाशन में सराहनीय है। इसे भेजने हेतु विवरण निम्नांकित है। **''श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति''** के नाम 'भारतीय स्टेट बैंक, सैक्टर 31, नोएडा की शाखा में चालू खाता सं0 35299035590, ब्रांच कोड : 15971, IFS Code : SBIN0015971। विज्ञापन–प्रकाशन राशि भी इसी खाते में जमा करा सकते हैं।

**कृपया सहयोग राशि अथवा विज्ञापन-प्रकाशन राशि भेज कर हमें उपर्युक्त ई मेल या 09899004263 पर सूचित करने का अनुग्रह करें, ताकि तदनुसार प्राप्ति रसीद जारी की जा सके।**

# अध्यक्ष की ओर से

प्रिय श्रीरामचरितमानस प्रेमियो!

आजकल हमारे देश में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। समाज में पाश्चात्य संस्कृति का तेजी से प्रभाव बढ़ रहा है। हम अपनी शिक्षा, व्यवहार, समाज के प्रति कर्तव्य, धर्म तथा सेवा भावना से विमुख होकर मानव–जाति का अहित कर रहे हैं। आज प्रेम और भाईचारे का स्थान हिंसा एवं वैमनस्य ने ले लिया है, जिसका प्रमुख कारण अत्यधिक सांसारिक वैभवों को प्राप्त करने की होड़ लगी है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी आपसी सद्भाव बढ़े, जन–जन में ईश्वरीय आस्था तथा भावी पीढ़ी में सुसंस्कार जाग्रत हों, इसी उद्देश्य से 'श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति, नोएडा' की सन् 1990 में स्थापना हुई, जिसका अगस्त 2015 को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति में विलय हो गया है।

हमारा उद्देश्य श्रीरामचरितमानस पाठ एवं प्रवचनों के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी के पावन चरित्रों का प्रचार–प्रसार कर समाज एवं धर्म की सेवा करना है। इसके द्वारा हम सभी का कल्याण होगा। यह समिति अपने स्थापना काल से मार्च 2019 तक 462 मानस पाठ एवं प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित करा चुकी है। इसी कड़ी में अब तक अनेक विख्यात कथाकारों जैसे– संत प्रवर श्री विजय कौशलजी महाराज, रामभक्त पं0 मधुकरजी, श्री लक्ष्मीनारायण शर्माजी, डॉ0 पं0 रामगोपाल तिवारी, पं0 बलराम मिश्रजी, पं0 बैजनाथ शुक्लजी, श्री श्री 1008 श्री प्रेमाचार्यजी, श्री बैजूनाथजी महाराज, आचार्य श्यामसुंदर शरणजी, गोस्वामी रमाकांत चतुर्वेदीजी, मानस माधुरी श्रीमती अखिलेश्वरी देवी, आचार्य अखिलेश्वरानन्द (अंगदजी) महाराज, स्वामी श्री राजेश्वरानन्द सरस्वतीजी, पं0 सुरेन्द्र शास्त्री 'मानस कुसुम' आदि के प्रवचनों का आयोजन किया जा चुका है। ऐसे ही कार्यक्रम भविष्य में भी होते रहें, ऐसी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है।

गत 28 वर्षों की भाँति इस वर्ष भी शनिवार दिनाँक 13 अप्रैल 2019 को श्रीराम जन्ममहोत्सव का आयोजन महाराजा अग्रसेन भवन, सैक्टर–33, नोएडा में किया जा रहा है। इस स्मारिका के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के लिए हम सभी विज्ञापनदाताओं एवं दानदाताओं का आभार प्रकट करते हैं। इस वर्ष "श्रीरामनवमी" के पावन पर्व पर रामकथा एवं श्रीरामजन्म महोत्सव का **आयोजन उपर्युक्त तिथि पर प्रातः 10 बजे से अपराह्न 2 बजे तक होगा। इस पावन वेला में आचार्य कविता कांत वाजपेयी श्रीराम कथामृत पान कराएँगे।** मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस कार्यक्रम के द्वारा जन–जन में धार्मिक भावना का प्रचार–प्रसार होगा, समाज का नैतिक उत्थान होगा तथा प्रभु श्रीराम के आदर्शों पर चलकर हम स्वयं अपने परिवार, समाज, देश और विश्व का कल्याण कर सकेंगे।

# समिति द्वारा आयोजित मानस पाठ एवं प्रवचन

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत) द्वारा समय समय पर श्रीरामचरितमानस अखण्ड पाठ/सुन्दरकाण्ड पाठ एवं प्रवचन (सत्संग) का आयोजन किया जाता रहा है। इस क्रम में **मार्च 2019 तक 462 मानस पाठ एवं प्रवचन आयोजित किये गये।** इसका विवरण समिति की विगत वर्षों की स्मारिका में प्रकाशित किया गया है। पिछले एक वर्ष में 18 पाठ एवं प्रवचन (श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ) आयोजित हुए, जिनका विवरण निम्नांकित है –

| क्र.सं. | तिथि | नाम व पता जिनके निवास पर कार्यक्रम आयोजित हुए |
|---|---|---|
| 1. | 30.04.2018 | श्री राजू अम्बावता, ग्राम निठारी, नोएडा |
| 2. | 28.05.2018 | श्री एस. एन. सिंह जी, डी–2, सैक्टर 47, नोएडा |
| 3. | 28.06.2018 | श्री प्रकाश नारायण शर्मा, नौगांव, मध्य प्रदेश |
| 4. | 29.06.2018 | श्री मामचंद यादव, ए–406, सैक्टर 49, नोएडा |
| 5. | 03.07.2018 | श्री अनिल कुमार शर्मा, नवीन शाहदरा दिल्ली–110032 |
| 6. | 07.07.2018 | श्री जे0 के0 गुप्ता, ए–87, सैक्टर–49, नोएडा |
| 7. | 15.08.2018 | केन्द्रिय विद्यालय संगठन क्वाटर्स, नोएडा |
| 8. | 11.10.2018 | श्रीमति भारती चतुर्वेदी, बी–2/721, ब्लॉक 14, नोएडा |
| 9. | 24.11.2018 | श्री संजय बंसल, ए–58, सैक्टर–36, नोएडा |
| 10. | 25.11.2018 | पं0 दिनेशचन्द्र शर्मा, ए–447, सैक्टर–47, नोएडा |
| 11. | 25.12.2018 | श्री सी0 एस0 एन0 मूर्ति, आई–43, सैक्टर–14, नोएडा |
| 12. | 22.01.2019 | श्री ज्ञानेन्द्र अवाना, बी–70, सैक्टर–56, नोएडा |
| 13. | 30.01.2019 | श्री रोहित कुमार त्यागी, 775 फरेरा टावर महागुन माडर्न, सैक्टर–78, नोएडा |
| 14. | 08.02.2019 | श्री पी0 के0 गर्ग, डायमंड क्राउन, एच–55, सैक्टर–51, नोएडा |
| 15. | 30.03.2019 | श्री अनिल कुमार गुप्ता, डी–16, सैक्टर–36, नोएडा |

## श्रीरामकथा ज्ञान यज्ञ कार्यक्रम

| क्र.सं. | तिथि | कार्यक्रम | स्थान | कथा व्यास |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 25.03.2018 | श्रीराम जन्ममहोत्सव | अग्रसेन भवन, सै0–33, नोएडा | डॉ॰ पं॰ रामगोपाल तिवारी |
| 2. | 17.08.2018 | तुलसी जयंती समारोह | श्रीराम मन्दिर, सी ब्लॉक, सैक्टर–36, नोएडा | आचार्य श्री राघव किंकर |
| 3. | 25.11.2018 | श्रीरामकथा आयोजन | ए–447, सैक्टर–47, नोएडा | आचार्य पं॰ बैजनाथ शुक्ला |

# इस अंक में


| क्रमांक | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 01. | अध्यक्ष की ओर से | | 30 |
| 02. | समिति के सदस्यों की सूची | | 07 |
| 03. | पाठकों के विचार | | 09 |
| 04. | श्रीराम जन्म–महोत्सव की झलकियाँ | कथा व्यास : डॉ0 पं0 रामगोपाल तिवारी | 13 |
| 05. | तुलसी जयंती समारोह | कथा व्यास : आचार्य श्री राघव किंकर | 21 |
| 06. | श्रीराम कथा आयोजन | कथा व्यास : आचार्य श्री बैजनाथ शुक्ला | 25 |
| 07. | तुलसी का स्वभाव एवं व्यक्तित्व | डॉ0 शंकर शरण तिवारी | 29 |
| 08. | जीवन में स्वप्न का महत्व | डॉ0 पं0 राम गोपाल तिवारी 'मानस रत्न' | 39 |
| 09. | पेम अमिय मंदरु बिरहु | श्री राम जन्म सिंह | 45 |
| 10. | श्रीरामचरितमानस में शिव चरित्र | आचार्य कविता कान्त वाजपेयी | 49 |
| 11. | सीते माँ! कोटि प्रणाम तुम्हें | श्री सरल शास्त्री | 54 |
| 12. | राम अनंत अनंत गुन | डॉ0 सहृदय नारायण उपाध्याय | 57 |
| 13. | जनकसुता जग जननि जानकी | श्री देवेन्द्र शर्मा | 65 |
| 14. | अगुन अमान मातु पितु हीना | पं0 दिनेश चंद्र शर्मा | 71 |
| 15. | मनुआ चलो ओरछा धाम | पं0 राजेश तिवारी 'मक्खन' | 76 |
| 16. | धनुष यज्ञ : एक वैज्ञानिक पक्ष | श्री गोपाल कृष्ण फरलिया | 77 |
| 17. | राम दूत मैं मातु जानकी | श्रीमती रीता कश्यप | 81 |
| 18. | मोहि कहाँ बिश्राम | श्री जगदीश प्रसाद शर्मा | 85 |

| क्रमांक | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 19. | श्री लक्ष्मण एवं देवी उर्मिला का त्याग | पं0 गोपाल कृष्ण पण्डया | 93 |
| 20. | करम प्रधान बिस्व करि राखा | डॉ0 भगवान दास पटैरया | 97 |
| 21. | मुष्टि प्रहार हनत सब भागे | श्री अवध किशोर दूबे | 101 |
| 22. | राम कथा सुंदर करतारी | श्रीमती राजवती शर्मा | 105 |
| 23. | देहु एक बर भरतहि टीका | पं0 राधाकृष्ण पाठक | 111 |
| 24. | रघुपति भगति सजीवन मूरी | श्री राजेश तिवारी 'मक्खन' | 114 |
| 25. | मिलइ जो संत होइ अनुकूला | श्री जगत प्रकाश पालीवाल | 120 |
| 26. | दुलह राम, सिय दुलहिन | श्रीमती ज्योत्सना प्रसाद | 122 |
| 27. | त्रिजटा नाम राक्षसी एका | पं0 राम नरेश तिवारी | 128 |
| 28. | हनुमान चालीसा का महत्व | डॉ0 रविन्द्र कुमार शर्मा | 131 |
| 29. | श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति का वर्ष 2017–18 का आय–व्यय विवरण | | 134 |
| 30. | श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्र | | 135 |
| 31. | श्रीरामशलाका प्रश्नावली | | 141 |
| 32. | विक्रमी संवत् 2076 के व्रत, पर्व, त्योहारों की सूची | | 145 |
| 33. | पारायण–विधि | | 158 |
| 34. | आरती एवं वन्दना | | 161 |
| 35. | श्रीरामचरितमानस पाठ एवं यज्ञ आयोजन हेतु आवश्यक सामग्री | | 168 |


**विशेष : स्मारिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।**

# श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति ( पंजीकृत )

## सदस्यों की सूची

| क्र.सं. | नाम सदस्य | पता | दूरभाष | पद |
|---|---|---|---|---|
| 1. | **पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा** | **ए—447, सै0—47, नोएडा—201303** | **9811056467** | **अध्यक्ष** |
| 2. | **डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी** | **1इ, वार्ड नं0 26, लक्ष्मीबाई रोड, देहरादून** | **09411714660** | **उपाध्यक्ष** |
| 3. | **श्री देवेन्द्र सिंह अवाना** | **B 5/6, सामने C-4/106, सै0—31, नोएडा** | **9811602397** | 〃 |
| 4. | **डॉ0 भगवान दास पटैरया** | **डी—11, सै0—36, नोएडा** | **9899004263** | **महासचिव** |
| 5. | **डॉ0 रविन्द्र कुमार शर्मा** | **593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली—110061** | **9911307799** | **सचिव** |
| 6. | **श्री जे0के0 गुप्ता** | **ए—87, सै0—49, नोएडा** | **9810997834** | **कोषाध्यक्ष** |
| 7. | **श्री लीलूराम वर्मा** | **सी—49, सै0—23, नोएडा** | **9312280743** | **कार्यकारी सदस्य** |
| 8. | **श्री भिक्की लाल शर्मा** | **ए—105, सै0—20, नोएडा** | **9810836348** | 〃 |
| 9. | **श्री सूरजभान शर्मा** | **ए—141, सै0—20, नोएडा** | **8527132634** | 〃 |
| 10. | **श्री हुकमचन्द्र शर्मा** | **गली नं0—3C/7, बड चौक, ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा** | **9213999744** | 〃 |
| 11. | **श्री विनोद शर्मा** | **ए—19, सै0—22, नोएडा** | **9891117721** | 〃 |
| 12. | **श्री सुभाषचन्द्र मित्तल** | **865, जोशी रोड, करोल बाग, दिल्ली** | **9210364442** | 〃 |
| 13. | **श्रीमती नीलम श्रीवास्तव** | **एम—126, सै0—25, नोएडा** | **8800439949** | 〃 |
| 14. | **श्री शम्भू दत्त शर्मा** | **जी—2/3, शताब्दी एन्कलेव सै0—49, नोएडा** | **9868101502** | 〃 |
| 15. | **श्री अश्विनी कुमार भरद्वाज** | **बी—365, सै0—92, नोएडा—201305** | **9999533891** | 〃 |
| 16. | **श्री सी0एस0 भोगल** | **सी—2/103, सै0—36, नोएडा** | **9811026745** | 〃 |
| 17. | डॉ0 मनोज कुमार पटैरया | 25/3, सै0—1, पुष्प विहार, नई दिल्ली | 9868114548 | आजीवन सदस्य |
| 18. | श्री लक्ष्मी नारायण | 60, मातेश्वरी वार्ड नं0 11, नौ गाँव, (छतरपुर) म0प्र0 | 9893772149 | 〃 |
| 19. | श्री कृष्ण कुमार मिश्रा | 12/250, कोटेश्वर नगर, पो0 रविशंकर यूनिवर्सिटी, (R.S.U.) जिला—रायपुर—492010 | 9406379229 | 〃 |
| 20. | श्री देवेन्द्र कुमार रावत, | 266, वार्ड नं0 7, स्नेहल नगर, वर्धा (महाराष्ट्र) | 9423645351 | 〃 |
| 21. | श्री भगवानदास पाठक | मकान नं॰—87, कालीदास नगर, हनुमान रोड़, सूरत — 395006 | 9909253797 | 〃 |
| 22. | श्री रविशंकर चतुर्वेदी | 904, D-13, AWHO Sandeep Vihar, Seegehalli Kadugodi, बंगलौर—560067 | 9945169080 | 〃 |
| 23. | श्री विशम्बर दयाल शर्मा | ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा | 9289265996 | 〃 |
| 24. | श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता | सी—154, सै0—100, नोएडा | 9810464009 | 〃 |
| 25. | श्री राधेश्याम शर्मा | ए—55, सै0—27, नोएडा | 9999930102 | 〃 |

| क्र.सं. | नाम सदस्य | पता | दूरभाष | पद |
|---|---|---|---|---|
| 26. | श्री मांगेराम भारद्वाज | ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा | 9999232019 | आजीवन सदस्य |
| 27. | श्री रामेश्वर दत्त शर्मा | ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा | 9953508132 | " |
| 28. | श्री रणजीत सिंह विष्ट | एफ—110, सै—20, नोएडा | 9650324529 | " |
| 29. | श्री भीम सिंह | मोती मैमोरियल, दुर्गा पार्क, पो0—वसुन्धरा ग्राम—दल्लूपुरा, दिल्ली—110096 | 9810181724 | " |
| 30. | श्रीमती कुसुम पटैरया | डी—11, सै0—36, नोएडा | 9811201847 | " |
| 31. | श्री ए.के. सक्सेना | एच—329, बीटा—II, ग्रेटर नोएडा | 9540274589 | " |
| 32. | श्री देवीचरन शर्मा | बी—109, सै0—22, नोएडा | 9350859122 | " |
| 33. | वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी | एच 129, सै0—41, नोएडा | 9868943638 | " |
| 34. | श्री वेद प्रकाश बंसल | ए 33, सै0—19, नोएडा | 9350732724 | " |
| 35. | श्री रघुनाथ प्रसाद शर्मा | बी—10A—7 B, सै0—34, नोएडा | 9899797090 | " |
| 36. | श्री सतीश चन्द्र शर्मा | बी 170 B, सै0—26,नोएडा | 8800969798 | |
| 37. | श्री सुरेन्द्र कुमार ठक्कर | बी—69, सै0—52, नोएडा | 9891445905 | " |
| 38. | श्री लाल मोहन चौधरी | ए—390, सै0—47, नोएडा | 9899057335 | " |
| 39. | श्री अमर सिंह सेंगर | ए—162, सै0—20, नोएडा | 0120—2440128 | " |
| 40. | श्री भू निधि शर्मा | डी—185, सै0—49, नोएडा | 9871199809 | " |
| 41. | श्री श्रीपाल अवाना | ए—286, सै0—47, नोएडा | 9210638386 | " |
| 42 | श्री जगदीश प्रसाद शर्मा | 216, जी0जी0 हॉस्टल वाली गली होशियारपुर, सै0—51, नोएडा | 9311384212 | " |
| 43 | श्री यशपाल सिंह | बी—19, सै0—49, नोएडा | 9810339398 | " |
| 44. | श्रीमती मधुमालती | बी—69, सै0—52, नोएडा | 9891707373 | " |
| 45. | श्री विद्याराम अवाना | एच—7, सै0—27, नोएडा | 9891960087 | " |
| 46. | श्रीमती भारती चतुर्वेदी | बी—2 / 721, कैलाश धाम, ब्लाक नं0—14 सै0—50, नोएडा | 9650990257 | " |
| 47. | श्री शिवकुमार शर्मा | ए—100, सै0—33, नोएडा | 9871636341 | " |
| 48. | आचार्य योगेन्द्र पाण्डे | श्रीराम मन्दिर, सै0—36, नोएडा | 9810479542 | " |
| 49. | श्रीमती अर्चना शर्मा | बी—2 / 113, ब्लॉक नं0 8, कैलाशधाम अपार्टमैंट, सै0—50, प्लाट नं ई01, नोएडा | 9968422229 | " |
| 50. | श्री महावीर प्रसाद त्यागी | डी—61, सै0—49, नोएडा | 9810403264 | " |
| 51. | श्री परमात्मा शरण बंसल | ए—83, सै0—49, नोएडा | 9810169329 | " |
| 52. | श्रीमती सीमा चौबे | एफ—13, सै0—20, नोएडा | 9811323076 | " |
| 53. | श्री विपन कुमार | सी—3 / 149, सै0—36, नोएडा | 9868139393 | " |
| 54. | श्री नरेश चौहान | एफ—18, सै0—39, नोएडा | 9555955599 | " |
| 55. | श्री वी0जे0 चौधरी | बाली भगत रोड, बक्सी बाजार, कटक (उड़ीसा) 753001 | 9090438678 | " |
| 56. | श्री नरेन्द्र कुमार चाचान | 65—ए, लखीमी पाथ, गुवाहाटी—781028 | 9435553023 | " |
| 57. | श्री मामचंद | ए—406, सै0—47, नोएडा | 8368890732 | " |
| 58. | श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता | बी—16, सै0—49, नोएडा | 8527785636 | " |
| 59. | श्री प्रेम सिंह नागर | बी—0002, अजनारा (ग्रैंड हैरीटेज) सै0—74, नोएडा | 9266666052 | " |
| 60. | श्री अंकित अवाना | ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा | 9871775563 | " |
| 61. | श्रीमती बबीता भरद्वाज | बी—365, सै0—92, नोएडा—201305 | 9999533891 | " |

# पाठकों के विचार

## प्रकाशित लेख भक्ति-ज्ञान-वैराग्य से परिपूर्ण

मैं अत्यंत भाग्यशाली हूँ कि श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका के माध्यम से घर बैठे श्रीरामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों पर देश के महान परम आदरणीय विद्वान, मानस मर्मज्ञों के लेख पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रभु श्रीराम की सांसारिक लीलाओं की सुन्दर सरल भाषा में व्याख्यायित कथाओं के माध्यम से ब्रह्म के दर्शन कराये गये, जिनको पढ़कर आध्यात्मिक शक्ति में वृद्धि के साथ ही सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। ऐसे दुर्लभ लेखों द्वारा जो भक्ति, ज्ञान एवं वैराग्य से लवरेज हैं, निश्चय ही ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास में वृद्धि होती है तथा समाज में निहित दुर्गुणों एवं बुराइयों से हमें छुटकारा मिल सकता है और श्रीराम के राज्य की कल्पना को कलियुग में साकार कर सकते हैं। प्रकाशन सहयोग हेतु चैक संलग्न कर रहा हूँ।

**टी0 एल0 विश्वकर्मा,** एच0आई0जी0, ए–4/9 अनुजा विलेज,

रतनपुर सड़क होशंगाबाद रोड, मिसरोद, भोपाल, जिला भोपाल–462047 (म0 प्र0)

## स्मारिका प्रकाशन सराहनीय

मुझे श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 25वां अंक प्राप्त हुआ। मैं आभारी हूँ कि आपने मुझे भगवान श्रीराम के साहित्य से जोड़ा, यह कार्य सराहनीय है। पत्रिका का कलेवर भगवान का स्वरूप है, जिसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। विद्वान साधकों, चिंतकों के लेख सराहनीय एवं पठनीय हैं तथा आत्म शांति प्रदान करने वाले हैं। ईश्वर इसी तरह क्रम बनाये रखे। ऐसी कामना करता हूँ।

**राधाकृष्ण पाठक 'अतीत',** सोन तलइया मार्ग, भाण्डेर, जिला दतिया (म0प्र0) 475335,

फोन : 08878455227

हे नाथ! हे मेरे नाथ!! मैं आपको भूलूँ नहीं।।

"जो दूसरे का अधिकार होता है, वही हमारा कर्त्तव्य होता है।"

– श्रद्धेय स्वामी जी श्रीरामसुखदास महाराज

## आवरण चित्र अत्यंत आकर्षक

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 25वाँ अंक प्राप्त कर बहुत प्रसन्नता हुई। इसका आवरण चित्र अत्यंत आकर्षक है और इसी के अनुरूप सभी लेख भी जीवन में प्रेरणा स्रोत हैं। मैंने इसे अपने पूजाघर में सम्हाल कर रखा है और समय–समय पर इसमें प्रकाशित लेख पढ़कर आनंदित होता हूँ। सहयोग राशि आपके खाते में जमा कर दी गई है।

**राम बाबू शर्मा**, 1/58, गली नं0 2, विश्वास नगर, दिल्ली–110032। फोन : 880054501...

## सराहनीय लेख

आपकी संस्था द्वारा प्रकाशित स्मारिका मुझे प्रति वर्ष नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। ईश्वर से प्रार्थना है कि इसका प्रकाशन आगे भी होता रहे। इसमें प्रकाशित 'स्वर्ण लंका दहन का वैज्ञानिक पक्ष' एक शोधपूर्ण लेख है और बहुत ही सराहनीय है। 'तुलसी जयंती समारोह' में इसको मैंने पढ़कर सुनाया। लोग चकित रह गए। अन्य सभी लेख भी सराहनीय हैं।

**राम जन्म सिंह,** ग्राम–पोस्ट दामा, तहसील मेहनगर, जिला आजमगढ़ (उ0प्र0) – 276204

## जीवनोपयोगी सामग्री प्रकाशित

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का वार्षिक 25वाँ अंक प्राप्त हुआ। संपादक मण्डल को साधुवाद। इसमें जीवन का मार्ग प्रशस्त करने वाली, बहुमूल्य जीवनोपयोगी सामग्री प्रकाशित है। 'श्रीराम कथा' को अत्यंत प्रभावशाली शैली में प्रस्तुत किया गया है। यह बहुत उपयोगी पुस्तक है।

**नरेश चंद्र**, आर–11/91, राजनगर, गाजियाबाद (उ0प्र0) 201002। फोन : 9868830021

## स्मारिका संग्रहणीय ग्रन्थ

मुझे श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 25वाँ अंक पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इसमें प्रकाशित लेख तथा इनकी सरल प्रेरणात्मक भाषा–शैली बहुत रोचक लगी। इसमें अधिकांश लेख शोधग्रन्थ के समान हैं तथा संग्रहणीय हैं।

**रविदास मानकपुरी**, कांकेर (छत्तीसगढ़) फोन : 9479024598

## श्रीरामनाममय सुंदर लेख

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 25वाँ अंक प्राप्त हुआ। इसमें प्रकाशित सभी लेख श्रीरामनाममय हैं और इसीलिए सभी सुंदर हैं। जिसमें राम का नाम है वही सुंदर है, वही सर्वोत्तम है। सभी लेख श्रीरामचरितमानस से संबंधित हैं और 'मानस' तो 'राम नाम' का अथाह सागर है। इसमें प्रारंभ में ही गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है –

**एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा॥**

(1/10/1)

**जयनारायण अग्रवाल**, छतरपुर (म0प्र0) फोन : 9425141521

## स्मारिका ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 25वाँ अंक प्राप्त हुआ। सभी लेख भक्ति ज्ञान–विज्ञान से परिपूर्ण हैं। आज के इस आपाधापी युग में यह समिति भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने एवं 'मानस' के माध्यम से जो समाज को जागरूक कर रही है वह बहुत ही प्रशंसनीय है। मानव कल्याण का रामभक्ति सर्वोत्तम साधन है। हम सब राम की भक्ति करें, इसी कामना के साथ।

**पं0 रामनरेश तिवारी**, पिण्डीवाला प्रयागराज–211006। फोन : 9413443173

## भाव विभोर करने वाली पत्रिका

आपकी स्मारिका पढ़ी। सभी लेखों में बहुत सुन्दर भाव हैं। यह भाव विभोर करने वाली पत्रिका है। जब भी में इसे पढ़ने लगता हूँ तो मेरे मन में भी कुछ चौपाइयों के अर्थों के भाव उत्पन्न होते हैं और लगता है कि मैं भी स्मारिका के लिए लेख भेजूँ, पर 'गृह कारज नाना जंजाला" में उलझ जाता हूँ। अगले अंक में लेख भेजने का प्रयास करूँगा।

**बाल किशन अग्रवाल**, कोटिर, तमिल नाडू। फोन : 9364100408

पाठकों से निवेदन है कि स्मारिका में प्रकाशित लेखों के संदर्भ में अपने विचार ई–मेल (bpateria@gmail.com), Whats App : 9899004263 अथवा A 447 सेक्टर 47, नोएडा–201303 पर पत्र द्वारा प्रेषित करने का अनुग्रह करें ताकि हम तदनुसार आगामी अंक में सुधार कर आपकी प्रतिक्रिया इस स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कर सकें।

## सहयोग राशि भेजने वालों को साधुवाद

स्मारिका प्रकाशनार्थ हमें विज्ञापन दाताओं एवं श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के सदस्यों के अतिरिक्त दिल्ली, रोहतक (हरियाणा), भीलवाड़ा, कोटा, सीकर, जैसलमेर, जूही और जयपुर (राजस्थान), चंडीगढ़, कैमूल (बिहार), चंद्रपुर (महाराष्ट्र), भोपाल, नरसिंहपुर, मुरैना, (मध्य प्रदेश), सुरेन्द्र नगर (गुजरात), कटक (उड़ीसा), गाजीपुर, मेरठ कानपुर एवं मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश), एरोड (तमिलनाडु), भाटापारा (छत्तीसगढ़) के पाठकों से सहयोग राशि प्राप्त हुई है। हम विज्ञापन दाताओं एवं उपर्युक्त पाठकों को साधुवाद ज्ञापित करते हुए आशान्वित हैं कि भविष्य में भी स्मारिका के प्रचार–प्रसार हेतु इसी तरह सहयोग करके हमारा उत्साहवर्धन करते रहेंगे।

## लेखकों के लिए, मुद्रक (प्रिंटर) के सुझाव

1. कृपया अपने लेख, MS Word या Corel Draw 13 साफ्टवेयर में टाइप करें।
2. टाइप के लिए Dev-10 या Kruti-10 फॉन्ट का प्रयोग करें। यह सभी टाइप सेन्टर्स पर उपलब्ध होता है।
3. लेख हमें vinit.tyagi.gzb@gmail.com पर भेजें एवं bpateria@ gmail.com पर cc करें।
4. ई–मेल के Subject में कृपया स्मारिका व लेख का नाम अवश्य डालें। उदाहरणार्थ 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' लेख का Subject इस तरह होगा – Navmi Smarika : Maryada Purusottam Ram

# प्रेरक प्रसंग

***  एक व्यक्ति ने आचार्य श्री विद्यासागर जी से पूछा- वृद्धाश्रम में रहने वाले माता-पिता की मृत्यु होने पर परिवार वालों को कितने दिन का सूतक लगता है? गुरुदेव ने बड़ा सुन्दर जवाब दिया। जिस व्यक्ति ने अपने माता पिता को वृद्धाश्रम भेज दिया है। उसे तो जीवन भर का सूतक लग गया है। वह मन्दिर जाने लायक और शुभ कर्म करने लायक ही नहीं है।**

***  जीवन में आधा दु:ख गलत लोगों से उम्मीद रखने से आता है और बाकी का आधा दु:ख सच्चे लोगों पर शक करने से आता है।**

***  शीशा कमजोर बहुत होता है, मगर सच दिखाने से घबराता नहीं है।**

# श्रीराम जन्ममहोत्सव की झलकियाँ

कथा व्यास : **डॉ0 पं. रामगोपाल तिवारी 'मानस रत्न'**,
ग्राम पो0-निवादा, जिला बाँदा (उ0प्र0)-210220, फोन : 9451142792

भौतिक प्रगति के इस युग में दिन प्रतिदिन नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। नई पीढ़ी में सुसंस्कार जाग्रत करने के उद्देश्य से भगवान के अवतारों एवं महापुरुषों के जन्मदिन पर महोत्सव आयोजित करना तथा उनसे शिक्षा ग्रहण कर अपना आचरण सुधारना, समय की माँग है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु यह समिति विगत 27 वर्षों से श्रीराम जन्ममहोत्सव आयोजित करती आ रही है। इसी शृंखला में 27वाँ महोत्सव विक्रमी संवत् 2075 की श्रीराम नवमी तदनुसार रविवार दिनाँक 25 मार्च 2018 ई0 को 'महाराजा अग्रसेन भवन', सैक्टर–33, नोएडा में आयोजित हुआ। इसका शुभारंभ श्री गणेश पूजन, हनुमान चालीसा पाठ एवं संकीर्तन से प्रातः 10 बजे हुआ। इस पावन वेला में चित्रकूटधाम से पधारे मानस मर्मज्ञ, मानस रत्न डॉ0 पं0 रामगोपाल तिवारी ने श्रोताओं को श्रीरामकथामृत पान कराकर भाव विभोर कर दिया। श्रीराम कथा के कुछ 'रस विन्दु' पाठकों के लाभार्थ निम्नांकित प्रस्तुत हैं :–

अखिल ब्रह्माण्ड नायक कण–कण में सर्वत्र समान रूप से व्याप्त निर्गुण ब्रह्म को सगुण–साकार रूप धारण करने की आवश्यकता क्यों पड़ी तथा किन कारणों से उसने नर रूप धारण किया– यह मूल प्रश्न सतीजी का था और पार्वती जी ने भी यही प्रश्न शिवजी से किया। अन्तर केवल इतना है कि सतीजी का संदेह था कि वह निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप धारण कर ही नहीं सकता, जबकि पार्वतीजी को उनकी परीक्षा लेने पर यह तो समझ में आ गया कि निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप धारण कर सकता है, पर उसके सगुण रूप धारण करने के क्या कारण हैं, यह उनकी जिज्ञासा थी। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

**ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।**
**सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद॥**

(1 / 50)

**राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी। सर्ब रहित सब उर पुर बासी॥**
**नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू। मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू॥**

(1 / 120 / 6–7)

सतीजी और पार्वतीजी दोनों के प्रश्नों में 'धरि' एवं धरेउ शब्द पर विचार कीजिए। 'धरि / धरेउ' अर्थात धारण करने से आशय यह है कि जो वह है नहीं उस वेश को धारण करना जैसे कि हनुमान जी के संदर्भ में आया है कि वे विप्र वेश धारण करके श्रीराम–लक्ष्मण के समक्ष गए तथा अन्य अवसरों पर उन्होंने विप्र वेश धारण किया यथा –

**बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ॥**

(4/1/6)

**बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषन उठि तहँ आए॥**

(5/6/5)

**राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत।**
**बिप्र रूप धरि पवन सुत आइ गयउ जनु पोत॥**

(7/1 क)

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो गया कि जिस निर्गुण ब्रह्म का कोई स्वरूप नहीं है उसने 'नर शरीर' धारण किया। अब विचार यह करना है कि किस कारण से उस अखिल ब्रह्माण्ड नायक ईश्वर ने नर शरीर धारण किया। राक्षसों का संहार तो उनकी इच्छा मात्र से संभव है।

इस तथ्य का प्रमाण श्रीराम–रावण युद्ध में मिलता है। श्रीरामजी कई बार रावण के सिर और बाहु काटते हैं, पर वे फिर से प्रकट हो जाते हैं। इस कथा को सुनाते हुए शिवजी कहते हैं कि हे उमा! जिस ईश्वर की इच्छा मात्र से सबको मारने वाला काल भी मर सकता है, वह ब्रह्म अब अपने भक्त विभीषण के प्रेम की परीक्षा लेने हेतु उनकी ओर देखता है अर्थात् उनसे इसका रहस्य जानना चाहता है –

**मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा। राम बिभीषन तन तब देखा॥**
**उमा काल मर जाकीं ईछा। सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा॥**

(6/102/2–3)

तब फिर क्या विशेष कारण रहा होगा क्योंकि उस ब्रह्म की कोई इच्छा नहीं होती है और बिना इच्छा के कोई कार्य संभव नहीं है। इस रहस्य को समझने के लिए हमें विभीषण–शरणागति का प्रसंग स्मरण करना होगा। शरणागति में आने के पश्चात विभीषणजी कहते हैं कि हे प्रभो! पहले मेरे मन में कुछ सांसारिक इच्छा थी, किन्तु अब वह आपके प्रेम रूपी सरिता में प्रवाहित हो गई। श्रीरामजी समझ गए कि इसे लंकेश बनने की चाह थी। उन्होंने सोचा कि नदी का जल तो समुद्र में आकर मिल जाता है, अतः उन्होंने समुद्र का जल मँगाकर उससे उनका तिलक करके उन्हें लंकापति घोषित कर दिया –

**उर कछु प्रथम बासना रही। प्रभु पद प्रीति सरित सो बही॥**
**अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी॥**
**एवमस्तु कह प्रभु रनधीरा। मागा तुरत सिंधु कर नीरा॥**
**जदपि सखा तव इच्छा नाहीं। मोर दरसु अमोघ जग माहीं॥**
**अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा॥**

(5/49/6–10)

आशय यह है कि श्रीरामजी बताना चाहते हैं कि उनकी अर्थात् उस अनीह असीम निर्गुण ब्रह्म की कोई इच्छा नहीं होती, पर भक्त की इच्छा उनकी इच्छा बन जाती है और जब इच्छा हो जाती है, तब उसकी पूर्ति हेतु वे नर शरीर धारण करते हैं। भगवान श्रीराम स्वयं कहते हैं कि हे विभीषण! तुम्हारे जैसे भक्तों के लिए ही मैं नर शरीर धारण करता हूँ –

**जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृद परिवारा।।**
**सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बरि डोरी।।**
**समदरसी इच्छा कछु नाहीं। हरष सोक भय नहिं मन माहीं।।**
**अस सज्जन मम उस बस कैसें। लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें।।**
**तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें। धरउँ देह नहिं आन निहोरें।।**

(5 / 48 / 4–8)

श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में ही गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि भगवान का अवतार केवल उनके भक्तों के लिए ही होता है यथा –

**एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानंद पर धामा।।**
**ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना।।**
**सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी।।**

(1 / 13 / 3–5)

इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि निर्गुण ब्रह्म अपने भक्तों के लिए सगुण–साकार रूप धारण करते हैं। ऐसे ही भगवान के एक ज्ञानी भक्त दम्पती मनु–शतरूपा हुए, उन्होंने घोर तप किया, उनके प्रेमवश भगवान ने उनकी इच्छा पूर्ण की।

**दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।**
**चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।।**

(1 / 149)

यह सुनकर भगवान बोले कि तुम्हारी इच्छा अब मेरी इच्छा बन गई और अब मैं ही तुम्हारा पुत्र बनूँगा क्योंकि मैं अपने समान कहाँ खोजूँ।

**आपु सरिस खोजौं कहँ जाई। नृप तव तनय होब मैं आई।।**

(1 / 150 / 2)

असुरों के अत्याचार से दुखी देवताओं, मुनियों आदि ने जब भगवान से प्रार्थना की तब उन्होंने आकाशवाणी करके कहा कि मैं कौशलपुर में जन्मे दम्पती भक्त दशरथ–कौशिल्या के यहाँ चारों भाइयों के रूप में अवतार लूँगा। अब प्रश्न यह था कि चारों भाइयों में अखिल ब्रह्माण्ड नायक ईश्वर कौन से होंगे।

इसके निराकरण हेतु आकाशवाणी द्वारा यह बताया कि मैं नारद के वचनों को सत्य करूँगा यथा –

**जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा। तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा।।**
**नारद बचन सत्य सब करहिउँ। परम सक्ति समेत अवतरिहउँ।।**

(1/187/1 तथा 6)

ब्रह्माजी ने इस आकाशवाणी को सुनकर सभी देवताओं को सलाह दी कि वानर शरीर धारण करके पृथ्वी पर जाकर श्रीहरि के चरणों की सेवा करते हुए उनके प्रकट होने की प्रतीक्षा करें –

**निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ।**
**बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ।।**

(1/187)

श्री हनुमानजी रुद्र रूप हैं और वे भगवान की प्रतीक्षा कर रहे थे। सीता हरण के पश्चात श्रीराम–लक्ष्मण उनकी खोज करते हुए ऋष्यमूक पर्वत के पास जाते हैं। श्रीराम–लक्ष्मण को आते देखकर भयभीत सुग्रीव उनका परिचय जानने हेतु हनुमानजी को भेजते हैं। वे विप्र वेश धारण करके श्रीराम–लक्ष्मण से उनका परिचय पूछते हैं। इसके उत्तर में श्रीरामजी कहते हैं –

**कोसलेस दसरथ के जाए। हम पितु बचन मानि बन आए।।**
**नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकमारि सुहाई।।**
**इहाँ हरी निसिचर बैदेही। बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही।।**

(4/2/1 – 3)

रुद्र रूप हनुमानजी तो अखिल ब्रह्माण्ड नायक ईश्वर के अवतरित होने की प्रतीक्षा में ही थे। उन्होंने आकाशवाणी के अनुसार दोनों लक्षण सही पाए अर्थात् दशरथ जी के पुत्र के रूप में वह ब्रह्म अवतरित होगा और नारदजी के शाप के अनुसार उनकी पत्नी का हरण हो जाएगा। इस प्रकार उन्होंने अपने प्रभु को पहचान लिया और चरणों में गिर पड़े –

**प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना।।**

(4/2/5)

ईश्वर के सगुण रूप को पहचानना बहुत कठिन है। जब रुद्रावतार भी भ्रमित हो सकते हैं, तब जन सामान्य की तो कोई गिनती ही नहीं है। इसी कारण काकभुसुंडिजी कहते हैं –

**निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ।**
**सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ।।**

(7/73 ख)

जब राजा मनु ने अयोध्या में राजा दशरथ के रूप में जन्म लिया, तब शतरूपा उनकी रानी कौशिल्या के रूप में आईं। महाराज दशरथ को चौथापन आ गया, किन्तु उनके कोई संतान नहीं हुई। उनकी तीन रानियाँ थीं, पर सभी निःसंतान। एक बार इस दुख से दुखी होकर उन्होंने गुरु वसिष्ठ से प्रार्थना की, तब उन्होंने श्रृंगी ऋषि को बुलाकर पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया। यज्ञ भगवान ने स्वयं प्रकट होकर प्रसाद देकर कहा कि यह रानियों में यथायोग्य बाँट दें, आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। इस प्रकार, इस यज्ञ को निमित्त बनाकर पूर्व जन्म के उन्हें दिए गए वरदान के अनुसार वे अखिल ब्रह्माण्ड नायक ईश्वर कौशिल्या जी के कक्ष में चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी के मध्याह्न में प्रकट हुए –

**भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।**
**हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी।।**

(1 / 192 / छन्द)

तत्पश्चात दूसरी रानी कैकेई ने एक तथा तीसरी रानी सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया। इस पावन वेला में पूरी अयोध्या में आनंद की वर्षा होने लगी। श्रीराम जन्ममहोत्सव की मंगल वेला में बधाई गीत गाए गए और श्रोतागण मंत्रमुग्ध होकर नृत्य करने लगे। श्रीरामजी का अवतार दो बार हुआ है, एक बार त्रेता युग में अयोध्या में बाल रूप में और दूसरी बार अयोध्या में एक ग्रन्थ के रूप में अर्थात् 'श्रीरामचरितमानस' के रूप में, क्योंकि श्रीराम जन्म के समय त्रेता युग में जो ग्रह–नक्षत्र–तिथि वार आदि था, कलियुग में भी वही योग उस दिन था, जब श्रीरामचरितमानस का लेखन प्रारम्भ हुआ –

**जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।**
**चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल।।**

(1 / 190)

**संबत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा।।**
**नौमी भौम बार मधु मासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा।।**
**जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं।।**

(1 / 34 / 4 – 6)

समयानुसार गुरु वसिष्ठजी ने नामकरण इस प्रकार से किया –

**जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी।।**
**सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा।।**
**बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।।**
**जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा।।**

(1 / 197 / 5 – 8)

**लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।**
**गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥**

(1/197)

भगवान ने अपनी बाल लीलाओं से सभी को परमानंद प्रदान किया। श्री शिवजी भगवान के बाल रूप दर्शनार्थ काकभुसुंडिजी के साथ ज्योतिषी के वेश में आए और दर्शन पाकर अयोध्या की गलियों में प्रेम मग्न होकर विचरते रहे।

पार्वतीजी को कथा सुनाते हुए शिवजी इसका रहस्य इस प्रकार से बताते हैं –

**औरउ एक कहउँ निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी॥**
**काकभुसुंडि संग हम दोऊ। मनुज रूप जानइ नहिं कोऊ॥**
**परमानंद प्रेमसुख फूले। बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले॥**

(1/196/3–5)

चारों भाई गुरु के आश्रम में पढ़ने गए। अल्पकाल में सभी विद्याएँ उनके पास आ गईं। कुछ समय बाद मुनि विश्वामित्र राक्षसों से अपने यज्ञ रक्षा हेतु श्रीराम–लक्ष्मण को माँगने अयोध्या आए। दशरथजी ने पहले तो मना कर दिया, पर वसिष्ठजी के समझाने पर उन्होंने श्रीराम–लक्ष्मण को मुनि विश्वामित्र के साथ विदा कर दिया। मार्ग में राक्षसी ताड़का आई और श्रीरामजी ने एक ही बाण से उसका संहार कर दिया। इससे विश्वामित्रजी को पूर्ण विश्वास हो गया कि ये अखिल ब्रह्माण्ड नायक ईश्वर के अवतार हैं। तब उन्होंने विद्यानिधि श्रीरामजी को वह विद्या दी, जिससे भूख–प्यास न लगकर अतुलित बल और तेज प्राप्त हो। इसके पश्चात अपने आश्रम पहुँच कर उन्होंने अपने सारे आयुध श्रीराम–लक्ष्मण को सौंप दिए –

**चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई॥**
**एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥**
**तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही। बिद्यानिधि कहुँ बिद्या दीन्हीं॥**
**जोते लाग न छुधा पिपासा। अतुलित बल तनु तेज प्रकासा॥**

(1/209/5 – 8)

**आयुध सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।**
**कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि॥**

(1/209)

इस प्रकार से अखिल ब्रह्माण्ड नायक, निर्गुण–निराकार केवल अपने भक्तों के लिए, उनकी रुचि / इच्छा पूर्ण करने के लिए ही धरा–धाम पर अवतरित होते हैं।

इस पावन वेला में समिति की स्मारिका का 25वाँ अंक विमोचित हुआ। स्मारिका में प्रकाशित लेखों के

संदर्भ में समिति के महासचिव डॉ० भगवानदास पटैरया ने प्रस्तुति दी। इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करने हेतु पूर्व आई.ए.एस. श्री गणेश शंकर त्रिपाठी ने स्मारिका एवं कार्यक्रम के संबंध में कहा कि प्रति वर्ष इतने बृहद् स्तर पर शायद ही कोई संस्था श्रीरामजन्म महोत्सव, नोएडा में आयोजित करती हो। स्मारिका की प्रतियाँ देश के कई राज्यों में भेजी जाती हैं और इसमें प्रकाशित ज्ञान–वैराग्य तथा भक्तिभाव से परिपूर्ण लेखों के लिए इसे संगृहीत करते हैं। इस कलियुग में यदि 'श्रीरामचरितमानस' की रचना न हुई होती तो हिंदू धर्म की रक्षा करना बहुत कठिन हो जाता। वास्तव में धर्म वह है जिसे हम धारण करते हैं अर्थात् जीवनोपयोगी जिन नियमों को हम अपने जीवन में आचरण में लाते हैं, वही धर्म है और इसकी शिक्षा श्रीरामचरितमानस में हर उम्र के लोगों के लिए एवं हर परिस्थिति के अनुसार उपलब्ध है। इस कार्यक्रम में 'अग्रवाल मित्र मंडल' का सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर समिति के लगभग सभी सदस्य, उ०प्र० के पूर्व आई.जी. श्री मुकेश बाबू शुक्ला, श्री हरीश चचान आदि उपस्थित थे। श्रीरामायण जी एवं श्रीराम जी की आरती के उपरान्त भोजन–प्रसाद (भंडारे) के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

भरत जी नंदिग्राम में रहते हैं, शत्रुघ्न जी उनके आदेश से राज्य संचालन करते हैं। भगवान को वनवास हुए तेरह वर्ष बीत गये। एक रात की बात है, कौशल्या जी को सोते में अपने महल की छत पर किसी के चलने की आहट सुनाई दी। नींद खुल गई। पूछा कौन है? मालूम पड़ा श्रुतिकीर्ति हैं। नीचे बुलाया श्रुति, जो सबसे छोटी है, आई, चरणों में प्रणाम कर खड़ी रह गई। राजमाता ने पूछा, श्रुति! इतनी रात को अकेली छत पर क्या कर रही हो बिटिया? क्या नींद नहीं आ रही? शत्रुघ्न कहाँ है? श्रुति की आँखें भर आईं, माँ की छाती से चिपटी, गोद में सिमट गई, बोली माँ उन्हें तो देखे हुए तेरह वर्ष हो गए। उफ! कौशिल्या जी का कलेजा काँप गया। तुरन्त आवाज लगी, सेवक दौड़े आये। आधी रात ही पालकी तैयार हुई, आज शत्रुघ्न की खोज होगी, माँ चली।

आपको मालूम है शत्रुघ्न जी कहाँ मिले? अयोध्या के जिस दरवाजे के बाहर भरत जी नंदिग्राम में तपस्वी होकर रहते हैं, उसी दरवाजे के भीतर एक पत्थर की शिला है, उसी शिला पर अपनी बाँह का तकिया बनाकर लेटे मिले। माँ सिरहाने बैठ गई, बालों में हाथ फिराया तो शत्रुघ्न जी ने आँखें खोलीं, माँ! उठे चरणों में गिरे, माँ आपने क्यों कष्ट किया? मुझे बुलवा लिया होता।

माँ ने कहा शत्रुघ्न यहाँ क्यों? शत्रुघ्न जी की रुलाई फूट पड़ी, बोले– माँ! भैया राम पिता जी की आज्ञा से वन चले गये। भैया लक्ष्मण भगवान के पीछे चले गये, भैया भरत नंदिग्राम में हैं, क्या ये महल, ये रथ, ये राजसी वस्त्र विधाता ने मेरे ही लिये बनाये हैं? कौशिल्या जी निरुत्तर रह गयीं। देखो ये राम कथा है, यहाँ त्याग की प्रतियोगिता चल रही है और सभी प्रथम हैं कोई पीछे नहीं रहा।

# राम कहा प्रनाम करु सीता

लंका–विजय के पश्चात श्रीराम जी पुष्पक विमान से सीताजी, लक्ष्मणजी, विभीषण तथा वानरदल के साथ अयोध्यापुरी की ओर जा रहे हैं। मार्ग में जैसे ही पतित पावनी गंगाजी दिखाई दीं, श्रीरामजी ने सीताजी से कहा कि गंगाजी को प्रणाम करो –

**पुनि देखी सुरसरी पुनीता। राम कहा प्रनाम करु सीता॥**

(6/120/6)

श्रीरामचरितमानस की इस चौपाई में एक ऐसा संदेश निहित है कि जिसके पालन से गृहस्थ जीवन में सदैव खुशहाली रह सकती है। बात बहुत छोटी सी है, पर कभी–कभी ऐसी छोटी–छोटी बातों की पुनरावृत्ति से पति–पत्नी में इतनी दरार पड़ जाती है कि जिसे भरना बहुत कठिन हो जाता है। लिखने का आशय यह है कि आजकल लोगों में स्वाभिमान कहिए या अभिमान इतना अधिक समाया है कि एक–दूसरे की बात सहन नहीं होती है। यदि पति या पत्नी कभी एक–दूसरे को किसी बात का स्मरण कराते हैं, तो यह कह कर बुरा मान लेते हैं कि हमें क्यों ऐसा कहा, क्या हम स्वयं इतने समझदार नहीं हैं जो इस बात का ध्यान रखें। श्रीराम जी ने सीताजी को परोक्षरूप से स्मरण दिलाया कि तुमने वन यात्रा के प्रारम्भ में गंगाजी से प्रार्थना की थी कि यदि हम तीनों सकुशल चौदह वर्ष बाद वापिस आएँगे तो मैं आपकी पूजा करूँगी –

**सियँ सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी॥**
**पति देवर सँग कुसल बहोरी। आइ करौं जेहिं पूजा तोरी॥**

(2/103/2–3)

श्रीराम जी के वचन सुनकर सीताजी ने गंगा मैया को प्रणाम किया तथा जब गंगा पार करके उसके तट पर पुष्पक विमान उतारा गया, तब सीताजी ने गंगाजी की पूजा की –

**तब सीताँ पूजी सुरसरी। बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी॥**

(6/121/8)

इस प्रसंग में एक शिक्षा यह भी छिपी है कि यदि हम जीवन में कभी कोई पूजा–अर्चना या किसी से कोई वादा करें, तो यथा समय उसका निर्वाह करना चाहिए। इसके लिए एक–दूसरे को स्मरण कराते रहना चाहिए, जैसे श्रीराम जी ने गंगाजी की पूजा करने का सीताजी को स्मरण कराया। इस प्रकार से श्रीरामचरितमानस के प्रत्येक प्रसंग में समाज के लिए, घर–परिवार के लिए और हर मानव के लिए कोई न कोई कल्याणकारी आचरण शिक्षा संनिहित है। हमें उसका पालन कराना–करना चाहिए।

# तुलसी जयंती समारोह

कथा व्यास : **आचार्य राघव किंकर**

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति एवं गीता रामायण समिति के संयुक्त तत्वावधान में पूर्व वर्षों की भाँति श्रावण शुक्ला सप्तमी संवत् 2075 तदनुसार 17 अगस्त सन् 2018 को श्रीराम मंदिर सैक्टर–36, नोएडा में 'तुलसी जयंती समारोह का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। श्रीगणेश पूजन के पश्चात 'सर्व हितकारी शिक्षा निकेतन पब्लिक स्कूल, निठारी, सैक्टर–31, नोएडा की बालिकाओं द्वारा 'गोस्वामी तुलसीदास' के जीवन चरित्र की प्रस्तुति की गई तथा काव्यपाठ किया गया। तदुपरान्त कथा व्यास आचार्य श्री राघव किंकर द्वारा गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं पर प्रकाश डालते हुए 'श्रीरामचरितमानस' के कुछ प्रसंगों की भावपूर्ण व्याख्या की गई। कुछ प्रसंगों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म स्थान (गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीरामचरितमानस के अनुसार) उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के अन्तर्गत ग्राम राजापुर है, परन्तु लोग गोंडा जिले के अन्तर्गत 'सूकर क्षेत्र' मानते हैं। जन्म स्थान जो भी हो हमें इस मतभेद में न पड़कर उनकी रचनाओं पर शोध करना चाहिए। उनका जन्म विक्रमी संवत् 1554 की श्रावण शुक्ला, सप्तमी के दिन हुआ था, यह तो निर्विवाद है। इस प्रकार से यह उनकी 521वीं जयंती है। उन्होंने कुल 14 ग्रन्थों की रचना की। जिनमें से 'श्रीरामचरितमानस' का सर्वाधिक प्रचार–प्रसार हुआ एवं कई भाषाओं में इस ग्रन्थ का अनुवाद हुआ। उन्होंने 77 वर्ष 8 माह की उम्र में श्रीरामचरितमानस की रचना ठीक उसी शुभ मुहूर्त में की जिसमें त्रेता युग में श्रीरामजी का जन्म हुआ था।

**संबत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा।।**
**नौमी भौम बार मधु मासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा।।**
**जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं।।**

(1 / 34 / 4–6)

श्रीरामचरितमानस में 27 श्लोक, 207 सोरठे, 1074 दोहे, 86 छंद, 4607 चौपाइयों एवं 3,52,924 अक्षर हैं। शिवजी की कृपा से हुई इस रचना का एक–एक अक्षर मंत्रवत् है। इस रचना में शिव कृपा का प्रभाव इस प्रकार से उल्लिखित है –

**सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ। बरनउँ रामचरित चित चाऊ।**
**भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती।।**

(1 / 15 / 8–9)

श्रीरामचरितमानस में 'श्रीराम विवाह' और 'शिव विवाह' का वर्णन आता है। इन सामाजिक प्रसंगों से हमें व्यावहारिक शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। श्रीरामजी की बारात को गोस्वामी जी ने बाराता लिखा है –

**बनइ न बरनत बनी बाराता। होहिं सगुन सुंदर सुभदाता।।**

(1/303/1)

इसका तात्पर्य यह है कि इसमें कोई विशेष तथ्य निहित है। पहला यह कि इस बारात में दूल्हा राजा नहीं थे, वे पहले से ही ससुराल में विराजमान थे। दूसरा यह कि इसमें बारातियों की संख्या बहुत अधिक थी। तैंतीस करोड़ तो केवल देवता ही थे। भला कौन नहीं इस बारात में शामिल होना चाहे? पर देवताओं को प्रवास हेतु जगह की आवश्यकता नहीं होती, वे अपनी इच्छानुसार रूप धारण करके आकाश मार्ग में भी विचरण कर सकते हैं। इसलिए राजा जनक को बारात का सम्मान करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। कठिनाई होती भी कैसे जब ऋद्धि–सिद्धियों की स्वामिनी साक्षात लक्ष्मी जी (सीता जी) उनकी पुत्री हैं। वर्णन आता है कि उन्होंने ही बारात की व्यवस्था की।

**जानी सियँ बरात पुर आई। कछु निज महिमा प्रगटि जनाई।।**
**हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि बोलाईं। भूप पहुनई करन पठाईं।।**
**सिधि सब सिय आयसु अकनि गईं जहाँ जनवास।**
**लिएँ संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास।।**

(1/306/7–8 एवं 1/306)

श्रीराम जी का श्रृंगार पैरों से सिर की ओर किया गया, जबकि शिव विवाह में उनका श्रृंगार सिर से पैरों की ओर किया गया। श्रीरामजी के श्रृंगार का वर्णन इस प्रकार से किया गया है –

**जावक जुत पद कमल सुहाए। मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाए।।**
**पीत पुनीत मनोहर धोती। हरति बाल रबि दामिनि जोती।।**
**कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर।।**
**पीत जनेउ महाछबि देई। कर मुद्रिका चोरि चितु लेई।।**
**सोहत ब्याह साज सब साजे। उर आयत उरभूषन राजे।।**

(1/327/2–6)

शिव विवाह में उनका श्रृंगार इस प्रकार से किया गया –

**सिवहि संभु गन करहिं सिंगारा। जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा।।**
**कुंडल कंकन पहिरे ब्याला। तन बिभूति पट केहरि छाला।।**
**ससि ललाट सुंदर सिर गंगा। नयन तीनि उपबीत भुजंगा।।**
**गरल कंठ उर नर सिर माला। असिव बेष सिवधाम कृपाला।।**

**कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा। चले बसहँ चढ़ि बाजहिं बाजा॥**

(1 / 92 / 1–5)

श्रीरामजी के पदकमलों से गंगाजी निकली हैं और गंगाजी को शिवजी ने अपने शीश पर धारण किया है, इसीलिए उन्होंने अपना श्रृंगार सिर से पैरों की ओर करवाया है। महाराज जनक और महारानी सुनयना ने कन्यादान किया। इस प्रकार से श्रीराम विवाह सम्पन्न हुआ। इसी क्रम में पूरे साज–श्रृंगार सहित जैसे श्रीसीताराम जी का विवाह हुआ, वैसे ही श्रीरामजी के तीनों भाइयों का विवाह इस प्रकार से हुआ –

**तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै।**
**मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुअँरि लईं हँकारि कै॥**
**कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई।**
**सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याह नृप भरतहि दई॥**
**जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै।**
**सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि सकल बिधि सनमानि कै॥**
**जेहि नामु श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।**
**सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी॥**

(1 / 325 / छंद)

कलियुग में दान का विशेष महत्व है और कन्यादान सर्वश्रेष्ठ है, अतः सभी दम्पतियों को कन्यादान अवश्य करना चाहिए। यदि अपनी कोई पुत्री न हो तो किसी सगे–सम्बन्धी या पड़ौसी की बेटी का कन्यादान करके पुण्य लाभ प्राप्त करना चाहिए।

चारों पुत्रों को वधुओं सहित देखकर राजा दशरथ को ऐसा सुख प्राप्त हुआ मानो उन्हें चारों पदार्थ – **'अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष'** प्राप्त हो गए हों –

**मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि।**
**जनु पाए महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि॥**

(1 / 325)

समारोह के समापन से पूर्व 'सर्वहितकारी शिक्षा निकेतन पब्लिक स्कूल, निठारी, सैक्टर–31, नोएडा की बालिकाओं को सम्मानित किया गया। सस्वर कण्ठस्थ काव्य पाठ हेतु प्रथम पुरस्कार 'कुमारी सपना को गीता रामायण समिति के महासचिव श्री सी0एस0 भोगल द्वारा प्रदान किया गया। द्वितीय पुरस्कार कुमारी नीशु तथा तृतीय पुरस्कार कुमारी सुन्दरम मिश्रा श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा द्वारा प्रदान किए गए। सान्त्वना पुरस्कार कुमारी मधु चौहान, रीतु एवं दीपा को

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के कोषाध्यक्ष श्री जे. के. गुप्ता द्वारा प्रदान किए गए। इन बालिकाओं को समारोह में प्रस्तुति हेतु मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्रदान करने हेतु उनकी अध्यापिकाओं नामशः सुश्री संजू झा, एवं सुश्री मंजु चौधरी की सराहना करते हुए उन्हें पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में गीता रामायण समिति के अध्यक्ष श्री दिनेश पाण्डेय तथा श्रीराम मंदिर के प्रधान पुजारी आचार्य श्री योगेन्द्र पाण्डेय तथा श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा एवं सभी सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा। श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समति के महासचिव डॉ0 भगवान दास पटैरया द्वारा 'धन्यवाद ज्ञापन' प्रस्तुत किया गया। श्रीरामजी की आरती एवं भोजन प्रसाद के साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ।

## जीवन का अमिट सत्य

**क्षणभंगुर जीवन की कलिका,**
**कल प्रातः को जाने खिली न खिली।**
**मलयागिरि की शुचि शीतल मंद,**
**सुगंध समीर मिली न मिली।।**

**कलिकाल कुठार लिए फिरता,**
**तन नम्र पै चोट झिली न झिली।**
**भजले हरि नाम अरी रसना,**
**फिर अंत समय पै हिली न हिली।।**

---

**आपके मन में यदि किसी एक के लिये भी बैर है.....**

**तो मन्दिर जाना आपके लिये सिर्फ एक सैर है.......**

## हरि से नेह लगहइहै

- स्व0 पं0 नंद किशोर तिवारी,

**मन तू हरि से नेह लगइहै तो अन्त समय सुख पइहै।**
**विषय बासना में यदि भरम्यो जीवन बृथा गवइहै।।१।।**

**धन दौलत अरु माल खजाना धरनि पड़े रहि जइहैं।**
**माता पिता सुत दारा बन्धू तेरे संग न जइहैं।।२।।**

**जिनके कारण पाप कमायो अन्त समय दुख दइहैं।**
**करें निरादर बृद्धापन में खान पान न पइहैं।।३।।**

**तीरथ बरत दान कछु करि कै रामनाम गुण गइहैं।**
**करुणासिन्धु भगति चिन्तामणि संत रूप से अइहैं।।४।।**

**चरण कमल नित रति कर ''नन्दू'' सरन राम की गइहैं।**
**प्रनतपाल रघुनाथ रामजी नैया पार लगइहैं।।५।।**

# श्रीराम कथा आयोजन

कथा व्यास : **आचार्य पं0 श्री बैजनाथ जी शुक्ला**
**फोन : 9811543195**

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष पं0 श्री दिनेश चन्द्र शर्मा जी के दाम्पत्य जीवन की स्वर्ण जयंती की मंगल वेला में उनके निवास ए–447, सैक्टर–47, नोएडा में सुन्दरकाण्ड पाठ तथा श्रीराम कथा का आयोजन रविवार दिनाँक 25 नवम्बर 2018 को सम्पन्न हुआ। कथा व्यास आचार्य पं0 श्री बैजनाथ जी शुक्ला ने श्रीराम विवाह की कथा श्रवण कराई। उनकी भावपूर्ण प्रेममय प्रस्तुति से श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो गए। कथा के कुछ अंश पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं –

श्रीरामचरितमानस में अढ़ाई विवाहों का वर्णन है। श्रीशिव पार्वती विवाह, श्रीसीताराम विवाह और आधा नारद विवाह क्योंकि वे जयमाला कार्यक्रम तक बड़ी आशा से पहुँच तो गए थे, पर जयमाला नहीं पड़ सकी। श्रीसीताराम विवाह तीन रीतियों से सम्पन्न हुआ। पुष्प–वाटिका में श्रीसीताराम जी ने एक–दूसरे के दर्शन किए और पसंद कर लिया, यह गंधर्व विवाह हुआ। शिव धनुष भंग करने के पश्चात सीताजी ने श्रीराम जी के गले में 'जयमाला' डाल दी। यह स्वयंवर प्रथा की रीति का विवाह था और फिर कुल रीति–वेद रीति के अनुसार विवाह हुआ। शिव धनुष टूटने के पश्चात जब महाराज जनक ने मुनि विश्वामित्र जी से पूछा कि अब आगे क्या करना चाहिए? तब वे कहते हैं –

**टूटतहीं धनु भयउ बिबाहू। सुर नर नाग बिदित सब काहू।।**

(1 / 286 / 8)

महाराज जनक की पुष्प–वाटिका में सरोवर के समीप **'गौरी मंदिर'** है। धनुष यज्ञ से एक दिन पूर्व श्रीसीता जी की माता ने उन्हें सयानी सखियों के साथ गौरी पूजन हेतु प्रातःकाल की पावन वेला में भेजा। उन्होंने सरोवर में स्नान करके अत्यधिक प्रेमपूर्वक गौरी जी की पूजा की और अपने अनुरूप सुंदर वर माँगा –

**पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा।।**

(1 / 228 / 6)

भगवत्पूजा अत्यधिक प्रेमपूर्वक करनी चाहिए, क्योंकि भगवान को केवल प्रेम ही प्रिय है। सनातन धर्म में पंचदेव 'शिव–विष्णु–सूर्य–दुर्गा–गणेश' के पूजन का विधान है। अपने इष्ट की मूर्ति मध्य में रखकर अन्य देवों की मूर्ति शास्त्रानुसार क्रम से चारों ओर रखनी चाहिए।

शिवजी आदि देवता हैं। उनकी दो शक्तियाँ हैं– गौरी और गंगा। सीताजी ने धनुष यज्ञ के पूर्व गौरी पूजन किया और 'मन कामना सिद्ध' वर पाया। वनवास काल में उन्होंने गंगाजी का पूजन किया और प्रार्थना की –

**सियँ सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी।।**
**पति देवर सँग कुसल बहोरी। आइ करौं जेहिं पूजा तोरी।।**

(2 / 103 / 2–3)

गंगाजी सीताजी की विनय सुनकर कहती हैं कि आपने ऐसी विनय करके मेरी बड़ाई की है। आपका प्रभाव सभी को विदित है तथापि मैं अपनी वाणी को सफल करने हेतु आशीष देती हूँ कि –

**प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ।**
**पूजिहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छाइ।।**

(2 / 103)

ठीक उसी समय जब सीताजी गौरी पूजन कर रही थीं, श्रीराम–लक्ष्मण अपने गुरु विश्वामित्र जी की आज्ञानुसार पूजा हेतु पत्र–पुष्प लेने पुष्प वाटिका में पधारे। श्रीराम जी ने मालियों से पूछ कर पुष्प चुनना प्रारम्भ किया –

**चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन।।**

(1 / 228 / 1)

चक्रवर्ती महाराज दशरथ के राजकुमार, मुनि विश्वामित्र के शिष्य एवं स्वयं राजा जनक के विशिष्ट अतिथि होते हुए श्रीराम ने बगीचे के माली से पूछकर पुष्प लिए। इस आचरण से उन्होंने हमें यह शिक्षा दी कि चाहे व्यक्ति कितनी भी ऊँची पदवी पर हो, मर्यादाओं का पालन अवश्य करना चाहिए। जब श्रीराम–लखन पुष्प चुन रहे थे, तब एक सखी ने समीप से उनके दर्शन किए और दौड़कर सीताजी को बताया –

**देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किशोर सब भाँति सुहाए।।**
**स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी।।**

(1 / 229 / 1–2)

सीताजी के मन में उन्हें देखने की उत्कंठा हुई और जब वे चलीं तब उनके नूपुर की ध्वनि से श्रीराम जी को ऐसा लगा मानो कामदेव ने उन पर आक्रमण कर दिया हो –

**कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि।।**
**मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्हीं।।**

(1 / 230 / 1–2)

सीताजी की सुन्दरता देखकर श्रीराम जी भाई लक्ष्मण से अपने मन की स्थिति बताते हुए कहते हैं कि जनक तनया सीता की अलौकिक सुंदरता को देखकर उनके पवित्र मन में क्षोभ हो रहा है –

**जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा।।**

( 1 / 231 / 3 )

इसी प्रकार क्षोभ कामदेव ने शिवजी के मन में भी पैदा कर दिया था –

**भयउ ईस मन छोभु बिसेषी। नयन उघारि सकल दिसि देखी।।**
**सौरभ पल्लव मदनु बिलोका। भयउ कोपु कंपेउ त्रैलोका।।**
**तब सिवँ तीसर नयन उघारा। चितवत कामु भयउ जरि छारा।।**

(1 / 87 / 4–6)

इन दोनों घटनाओं में एक विशेष अन्तर यह है कि जब श्रीराम जी के मन में काम ने क्षोभ उत्पन्न किया, तब उसने सीताजी के नूपुर का सहारा लिया, इसलिए श्रीराम जी को क्रोध नहीं आया, पर शिवजी के मन में जब क्षोभ उत्पन्न हुआ तब कामदेव छिप गया था। यदि उसने पार्वती जी का सहारा लिया होता तो बच जाता।

सीताजी ने श्रीराम जी के दर्शन किए तब उन्हें नारद जी के वचन स्मरण आए कि तुम्हारे स्वयंवर से पूर्व पुष्प वाटिका में जिस राजकुमार का तुम दर्शन करोगी, उसी से तुम्हारा विवाह होगा –

**सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत।**
**चकित बिलोकत सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत।।**

(1 / 229)

जब श्रीराम जी के दर्शन करते कुछ समय हो गया, तब एक सखी ने सीताजी से व्यंग्यपूर्ण शब्दों में कहा –

**पुनि आउब एहि बेरिआँ काली। अस कहि मन बिहसी एक आली।।**

(1 / 234 / 6)

सखी से यह व्यंग्यात्मक वचन सुनकर कि कल इसी समय यहाँ फिर आएँगे, सीताजी को संकोच हुआ और श्रीराम जी के स्वरूप को हृदय में धारण करके, अपने को पिता के प्रण के अधीन जानकर, पुनः गौरी जी के मंदिर में जाकर चरण वंदना कर प्रार्थना की जिससे प्रसन्न होकर गौरी जी ने आशीर्वाद दिया –

**सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।।**
**नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहि मनु राचा।।**

(1 / 236 / 7–8)

श्रीराम लक्ष्मण पत्र–पुष्प लेकर आए और गुरु मुनि श्री विश्वामित्र को सब कुछ बता दिया –

**राम कहा सबु कौसिक पाहीं। सरल सुभाउ छुअत छल नाहीं।।**
**सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही। पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही।।**
**सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे।।**

(1 / 237 / 2–4)

श्रीराम कथा को यहाँ पर विश्राम देते हुए एक भाव विभोर करने वाला बधाई गीत का गायन हुआ। तत्पश्चात श्रीराम जी की आरती एवं भोजन प्रसाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

## संत वचनामृत

– 'राम' नाम की महिमा अपार है। मरा–मरा कहकर भी वाल्मीकि ब्रह्मस्वरूप हो गये। भगवान का नाम जब तन्मय होकर लिया जाता है, तब हृदय में नामी तथा उसकी लीलाएँ प्रकट हो जाती हैं। अन्त स्थल में दैवी गुण प्रकट हो जाते हैं। समस्त अयोध्यावासी राम का, राम नाम का आश्रय पाकर कृतार्थ हो गए। इसी प्रकार श्री राधा सर्वेश्वरी ने नामों की महिमा, उनका अर्थ कहकर श्री यशोदा माता के कष्टों को दूर किया। उनके हृदय में भक्ति का उल्लास प्रकट होकर अनन्त सुख देने लगा।

देवता, मनुष्य, राक्षस कोई भी भगवान के नाम का आश्रय लेकर भगवान् को प्राप्त कर सकता है। मृत्यु–लोक में मरण निश्चित है। अन्त में भगवान का नाम मुख पर आए, इसलिए पहले से ही नाम का अभ्यास करना चाहिये। घर के कामों को करते समय मन में और स्पष्ट उच्चारण करते–करते जब अभ्यास बढ़ जाता है, तब अन्त में भगवान का नाम आता है। उससे इस लोक में परम कल्याण होता है, परलोक में भगवद्धाम में वास मिलता है। भगवान का नाम सबको आनन्द प्रदान करे, सभी रोग रहित हों। सभी निर्भय हों। जय जय श्री राध राधे।

संसार के अनेक रोग हैं और उनकी अलग–अलग औषधियाँ हैं, परन्तु राम नाम तो सभी रोगों की रामबाण औषधी है। शोक–मोह–लोभ आदि सभी रोगों के लिये एक राम नाम ही महान औषधी है। प्रह्लादजी न होलिका के जल जाने पर कहा कि देखो, जिसे न जलने का वरदान था, वह भी जल गयी, मेरे चारों ओर शीतलता है। मेरा एक रोम भी नहीं जला। राम नाम के जापक निर्भय रहते हैं।

भगवान के नाम, रूप, लीला और धाम– ये चारों सच्चिदानन्दमय हैं। एक को पकड़ने से चारों पकड़ में आ जाते हैं। सुलभ एवं शक्तिमान होने से नाम ही चारों में श्रेष्ठ है। नाम में लीला भरी है। राम नाम में रामायण, कृष्ण नाम में भागवत पुराण स्थित है। नाम पुकारने से रूप का आकर्षण होता है। वट– बीज में जैसे विशाल वृक्ष व्याप्त है, उसी प्रकार नाम में सब कुछ व्याप्त है। नाम का आश्रय लेने से रूप, लीला और धाम का आश्रय मिल जाता है।